SK/2N/4.00

SHRI PRASANNA ACHARYA (ODISHA): Sir, when I was in my area, I was all right. The moment I landed in Delhi, my throat got infected and my doctor says that it is due to severe air pollution in Delhi. Sir, day by day this problem is taking a very alarming situation, particularly in cities like Delhi. This problem is being faced by some other countries and State capitals of some other countries also. My point is, when they have been able to combat the situation, have control over the situation, what is our problem? I will give you one example, Sir. A couple of years ago, China was facing a very critical air pollution situation. It was worse than what we are facing here. They took several measures and improved a lot. Now, we are above China so far as air pollution is concerned. Sir, this is also applicable with respect to other State capitals. We have to consider, we have to study, we have to analyze our problem and see how to solve this problem. Basically, out of many reasons that are attributed for air pollution in Delhi, one big reason is stated to be burning of stubble in Punjab, Haryana and Uttar Pradesh. Sir, this burning of stubble in Punjab, Haryana and Uttar Pradesh is nothing new. Farmers of these States have been doing it since time immemorial. During that time, why was Delhi air not affected and why is it that during the last few years Delhi air is affected and pollution is growing

due to stubble burning? So, Sir, that is not the basic reason. If that is happening in Punjab, Haryana and some other neighbouring States, law is there. So, why are those particular States not taking preventive measures? That is number one. Number two, why are farmers of those States not being educated that stubble burning has to be stopped? Sir, vehicular population is increasing in Delhi. The Central Pollution Control Board and the National Environmental Engineering Research Institute, NEERI, have declared that vehicular emission is major contributor to Delhi's air pollution. Sir, vehicular population is estimated at more than 3.4 million, increasing at the growth rate of 7 per cent per annum. It is alarming. People will purchase vehicles; they will use vehicles. You can't stop them. But what about the capitals of other countries? What is happening in New York; what is happening in Washington; what is happening in London? More number of vehicles are running in those cities than in Delhi. How are they able to control it and why are we failing to control it? Sir, in Delhi, construction work is going on on a large scale. Last November, Sir, when the pollution problem was at its peak, the Delhi Administration put a temporary ban on the construction work. But, surprisingly, after only four days, I don't know why, this temporary ban was lifted. A large amount of unauthorized construction is taking place in Delhi and none of the builders are adhering to

the norms prescribed by the Pollution Control Board to control pollution. Neither the Central Government nor the Delhi Government is taking any action. That is one of the major reasons why Delhi air is severely polluted.

Sir, coming to industrial pollution, you will be astonished to know Delhi has the highest number of clusters of small-scale industries in India and that contributes to 12 per cent of air pollution. Most of the industries do not strictly follow the measures to check pollution and Pollution Control Board's directives are completely ignored. What is the Administration doing? No checking is done. The Administration does not bother which are the industries which are violating the norms prescribed by the Pollution Control Board. And the unauthorized construction, which is going on rapidly, is rather the major reason for air pollution in Delhi. Neither the Central Government is looking at it, nor the Delhi Government is concerned about it, nor the Corporations are concerned about it. (Time-bell)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHUBANESWAR KALITA): Please conclude.

SHRI PRASANNA ACHARYA: Just one minute, Sir.

Sir, the population of Delhi is going up. That is a trend of urbanization. Every year, more and more number of people, even from villages, are coming to Delhi and trying to settle down.

(Contd. by YSR/2O)

YSR-VNK/4.05/2O

SHRI PRASANNA ACHARYA (CONTD.): The population is increasing but we are not making elaborate facilities for the growing population. When there will be more people and little facilities, there will be pollution and you cannot check it. This is one of the prime concerns.

This is my last point. We need to have a national air pollution action plan. I would like to know from the Government what their action plan is. There is absolutely no action plan. It is time the Government had a national air pollution action plan. Thank you, Sir.

(Ends)

श्री हरिवंश (बिहार) : उपसभाध्यक्ष जी, दरअसल इस समस्या की गंभीरता क्या है, वह शुरू में मैं आपसे अर्ज करना चाहूंगा। मेरी दृष्टि में यह समस्या देश की उन एक-दो समस्याओं में से है, जिनके आगे पूरी व्यवस्था, पूरा सिस्टम लाचार दिखता है। हम दिल्ली की समस्या पर, दिल्ली के वायु प्रदूषण पर बात कर रहे हैं, पर यह देश की समस्या है। WHO की 2014 की रिपोर्ट के अनुसार दुनिया के 20 बड़े शहर, जो polluted हैं, उनमें से भारत के 10 शहर हैं। मेरा सुझाव है कि दिल्ली के साथ-साथ देश के उन शहरों की भी हम चर्चा करें, उनकी भी चिंता करें।

दूसरी बात यह है कि देश के जो सबसे important effective institutions हैं, वे कई बार इस समस्या को हल करने में असहाय क्यों दिखते हैं? कल यानी 27 दिसम्बर

को मैंने इसी संदर्भ में नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल का एक फैसला यानी Graded Response Action Plan' देखा। इसके पहले भी नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल इस पर काम करता रहा है। इसके पहले Supreme Court mandated Environment Pollution Control Authority है। खुद सुप्रीम कोर्ट इसको कई बार इस सवाल पर गंभीरता से देखता रहा है। सेन्ट्रल पल्यूशन कंट्रोल बोर्ड है, लोक सभा तथा राज्य सभा की पर्यावरण मामलों की स्थायी समिति है। दिल्ली में प्रदूषण का जो स्रोत माना जा रहा है, वह पंजाब और हरियाणा के किसान के द्वारा पराली जलाने को माना जा रहा है। दोनों राज्यों ने इसके लिए कानूनन प्रतिबंधित किया है कि अगर यहां किसान खेतों में फसल काट कर ऐसे छोड़ेंगे, तो हम उन पर दंड लगाएंगे। इसके लिए कहीं दो एकड़ पर 2,500 रुपए का दंड है और कहीं बड़े इलाके में 15,000 रुपए का दंड है। पर, ये बैन्स और फाइन्स भी ineffective हो रहे हैं। कल एक अच्छी खबर आई है कि प्रधान मंत्री जी के प्रिंसिपल सेक्रेटरी के नेतृत्व में हाई लेवल टास्क फोर्स का गठन हुआ है, 'Air Action Plan - Abatement of Air Pollution in the Delhi NCR'. मेरा इसमें सिर्फ एक सुझाव है कि इसमें दिल्ली की जगह पूरे देश को रखा जाए कि हम वहां कैसे साफ हवा दे सकें।

सर, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूँ कि हमें उन कारणों की तलाश करनी चाहिए, जिनकी वजह यह स्थिति बनी है। मूल कारण यह है, मैं गांधी को स्मरण करते हुए पुन: कहना चाहूंगा कि हमने प्रकृति के साथ जीना छोड़ दिया। गांधी जी ने कहा था कि प्रकृति सबकी न्यूनतम आवश्यकता पूरी करती है, लोगों का लोभ पूरा नहीं करती। आज नीतीश कुमार पूरे राज्य में, बिहार में और देश के अलग हिस्सों में घूमते हुए लोगों को याद दिलाते हैं कि अगर हम सचमुच चाहते हैं कि प्रकृति के सानिध्य में रहें, इन

चीजों से बचें, तो हम गांधी की उस बात की ओर लौटें। सर, आप देखिए कि इसका असर क्या हुआ।

इस देश में Prof. J.K. Galbraith, जो अमेरिका के राजदूत रहे, हमारे आदरणीय जयराम रमेश जी को बहुत अच्छी तरह पता होगा, उन्होंने *The Affluent Society* नामक किताब लिखी। उन्होंने उसमें लिखा कि अगर हम विज्ञापनों के माध्यम से समाज बनाएंगे, तो विज्ञापनों को देख कर हर आदमी के अंदर यह आकांक्षा होगी कि हमारा जीवन उतना समृद्ध, उतना बेहतर और उतना काल्पनिक हो। अगर हम उपभोक्तावादी समाज बनाएंगे, बाजार को हावी न होने देंगे, तो हम किधर ले जाएंगे? सर, आज हालत यह है कि हमने उस आर्थिक दर्शन के तहत अपने विकास का ढांचा बनाया है। हम पहाड़ों, नदियों, जंगलों, इन सबको खत्म कर रहे हैं।

सर, मैं आपको झारखंड के बारे में एक अनुभव बता सकता हूँ, क्योंकि मैं यहां आने के पहले एक पत्रकार था। हमने 14 सालों का सर्वे कराया। 16 बड़े पहाड़, जिनको प्रकृति ने दिया था, जो 8-10 करोड़ वर्ष पुराने थे, जिनके बारे में प्रोफेसर बीरबल साहनी ने कहा कि ये *fossils* हैं, इनको सुरक्षा करके बचा कर रखो, वे सारे कट गए, खत्म हो गए। सारे कानून के रहते हुए, सारी चीजें रहते हुए, हमने पहाड़ का पहाड़ काट दिया और खत्म कर दिया। नदियां खत्म हो गईं। आज बिहार में बिहार सरकार ने कदम उठाया कि नदियों से जो बालू निकाल करके माफियाज़ खड़े हो रहे हैं, उन पर कैसे कार्रवाई हो। हमने नदियों को खत्म कर दिया, हमने जंगल खत्म कर दिए। अब बाढ़, भूकम्प और तूफान तो हमारे जीवन का हिस्से हो गए हैं, इसलिए हमारी

जो राजनीतिक सोच है हर दल की, वह इस तरफ लौटे कि हम लोगों के बीच जाकर कहें कि greed और need के बीच फर्क करें, पर यह शुरुआत ऊपर से हो।

आज भारत में बहुत unequal society हो गई है, धनी लोग और धनी, गरीब लोग और गरीब...(समय की घंटी)... सर, मैं दो मिनट में अपनी बात समाप्त करूंगा।

उपसभाध्यक्ष (श्री भुवनेश्वर कालिता) : आप अपनी बात समाप्त कीजिए, आपका समय खत्म हो चुका है।

श्री हरिवंश : सर, हम इस अर्बनाइजेशन के दौर को रोकें। कारों की भीड़ की बात हो रही है, दो पहिया वाहन की बात हो रही है, हर जगह ट्रैफिक जाम की बात हो रही है। अगर हम उन चीजों को रोकना चाहते हैं, तो सचमुच हमें संकल्प लेना पड़ेगा।

(2पी/एनकेआर-वीकेके पर जारी)

NKR-VKK/2P/4.10

श्री हरिवंश (क्रमागत) : अभी दिवाली के अवसर पर माननीय सुप्रीम कोर्ट ने बहुत अच्छा फैसला दिया। ऐसे फैसलों का हमें आगे बढ़कर स्वागत करना चाहिए ताकि देश में पटाखों का चलन बंद हो, दूसरी चीज़ें बंद हों और मनुष्य का अस्तित्व बना रहे। अगर नई जेनरेशन के लिए हम अच्छा समाज छोड़कर जाएंगे, तभी हम अच्छे कहे जाएंगे। दरअसल आज दो जीवन दृष्टियों के बीच संघर्ष है। गांधीजी की जीवन दृष्टि से जो हमारा पुराना समाज रहा है, आज भी अगर हम आदिवासियों के बीच जाएं, जिस सान्निध्य में वे आज रहते हैं, उसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। दूसरे पश्चिम का उपभोक्तावादी समाज है, जहां निरंतर लोग अधिक-से-अधिक उपभोग में आनंद पाना

चाहते हैं। उसे लेकर अगर हम आगे चलेंगे तो हमारे लिए इस समस्या का निदान पाना मुश्किल होगा। मैंने हाल ही में consumerism पर एक पुस्तक पढ़ी, मैं लेखक का नाम भूल रहा हूं लेकिन वह बहुत महत्वपूर्ण है, जिसे Penguin Books ने छापा है और लगभग एक हजार पन्नों की वह पुस्तक है। उसमें कहा गया है कि आज दुनिया के जो कथित बड़े विकसित देश हैं, वहां यह हो रहा है कि एक-एक आदमी अपने जीवन में कितने-कितने products खरीदता है, कोई अपने उपभोग के लिए 8 हजार का, 10 हजार का अलग-अलग तरह का सामान खरीदता है - कपड़े, जूते आदि - लेकिन उनमें से कितना उपभोग कर पाता है - बहुत मामूली। बाकी चीजें रखी रह जाती हैं। अगर भारत के समाज को हम उसी रास्ते पर ले जाना चाहते हैं तो इस समस्या से देश को नहीं बचा पाएंगे। हमें गांधी जी के रास्ते पर लौटना होगा। मेरा आपसे यही आग्रह है कि गांधी जी के रास्ते पर चलकर ही हम समाज को बचा पाएंगे, धन्यवाद।

(समाप्त)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHUBANESWAR KALITA): Now, Shri C.P. Narayanan; you have four minutes.

SHRI C.P. NARAYANAN (KERALA): Sir, on the basis of my experience as a Member of the Standing Committee on Science and Technology, Environment and Forests, I would say that we have been reviewing the situation in Delhi for the last three years and we have found certain things. Four major factors are there. One is construction; another is transport; third

is city waste; and fourth, many others have said, is the burning of stubble in neighbouring States.

Regarding burning of stubble, I have to point out one additional point which was mentioned by the experts. It is that the city of Delhi has got a unique feature. On three sides, there are ridges and when this polluted air comes from Haryana and Punjab over here during the beginning of winter, it has heavy particles and during winter, the wind flow is also very poor. Because of that, these particles are suspended for days together. That is why, if you look at the last so many years, November-December is the worst period in Delhi and not other months. So, we have to note this. We have to find a solution for this. That is one.

Regarding construction also, there are methods. In various other cities, not only in India but in other countries, there are methods to prevent debris and powered gases or particles flowing into the air in other areas. This can be prevented. Only thing is that people involved in construction have to spend some more money and the Government has to insist on that.

Third is regarding transport. The Government is taking various measures but still one thing is that we have got diesel vehicles. They cause more pollution than the vehicles running on petrol. There are technical reasons for that. So, these have to be controlled. I am not saying that it is

not being done, but it has to be done on a much bigger scale because as my predecessors have said, every year, the number of vehicles plying in Delhi is increasing. Not only Delhi vehicles but also vehicles coming from other parts of the country passing through Delhi, particularly heavy vehicles, all of them have their contribution in increasing the pollution in Delhi. So, these have to be controlled. During the discussion on the NCR Bill and in this discussion also, it has been mentioned that there is lack of coordination between the Central Government and the Delhi Government.

(Contd. by BHS/2Q)

-VKK/BHS-DS/2Q/4.15

SHRI C.P. NARAYANAN (CONTD.): We can say various things but we are a democratic country. We have to find a solution for that. We should not stand on party basis. My figure is that this issue concerns about 19 million people, who are staying here and about one million or two million people pass through Delhi every day. They are being affected by lack of coordination between, I would say, three elements, that is, the Central Government, the State Government and the local governments. There has to be a better coordination among these.

Fourth point is that people have to play a major role. We have to educate people. I read in many places that there is no separation of waste

at the source. The organic waste has to be separated from the other waste. That has to be taken away daily. This has to be properly treated every day. This pattern has to be there. This is not there. So, in all these things, people have to be brought into the figure. They have to be educated. They are to be made a part and parcel of this. Starting from school children to very old people, all these people have to be made a part and parcel of this. In this, the three governments - the Central Government, State Government and the local governments have to play a major role. In this, we, the political party leaders and the administrators as well as the experts, have to play a much bigger role. What Delhi is suffering is lack of coordination between these various elements and lack of bringing people into play on all these things. I would request that on the basis of this discussion, the Central Government and the State Government should take more initiatives in this matter. Thank you. (Ends)

श्री वीर सिंह (उत्तर प्रदेश) : माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे दिल्ली में वायु प्रदूषण अत्यधिक बढ़ने संबंधी अल्पकालिक चर्चा पर बोलने का अवसर दिया, इसके लिए आपका धन्यवाद।

महोदय, दिल्ली-एनसीआर देश का दिल है। देश की राजधानी नई दिल्ली, जो देश का दिल कहलाता है, जब वही ठीक और स्वस्थ नहीं रहेगा, तो पूरे देश का क्या हाल होगा? आज यह बहुत ही चिन्ता का विषय है कि दिल्ली व एनसीआर में वायु

प्रदूषण अत्यधिक बढ़ा है, जिसके कारण लोगों को श्वास लेना मुश्किल हो गया है और तमाम तरह की बीमारियाँ जन्म ले रही हैं। दिल्ली में मृत्यु-दर बढ़ी है। इसको रोकने के लिए उपाय करना अति आवश्यक है। वाहनों से निकलने वाला धुआँ, जो वायु प्रदूषण का कारण है, उसमें पहले नम्बर पर वाहनों से निकलने वाला धुआँ है। दिल्ली में वाहन अत्यधिक बढ़ रहे हैं, इसके लिए मेट्रो और बस जैसे यातायात के साधनों की ज्यादा से ज्यादा व्यवस्था की जाए, जिससे छोटी गाड़ियाँ रुकें। जब आम जनता उन यातायात के साधनों से ज्यादा सफर करेगी, तो उससे प्रदूषण रुकेगा।

(श्री उपसभापति पीठासीन हुए)

दूसरा - औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाला धुआँ तथा रसायन। दिल्ली के आसपास और दिल्ली में जो औद्योगिक इकाइयाँ लगी हुई हैं, उनसे जो धुआँ निकलता है, उससे वायु में बहुत प्रदूषण होता है। उससे भी बहुत सारी परेशानियाँ पैदा हो रही है। मेरा सुझाव है कि एनसीआर में जो औद्योगिक इकाइयाँ लगी हुई हैं, जिनसे भारी मात्रा में धुआँ निकलता है, उन्हें दिल्ली से दूर लगाया जाए। अगर ऐसा कानून पास किया जाए, तो उससे हम वायु प्रदूषण को रोक सकते हैं।

आणविक संयंत्रों से निकलने वाली गैस व धूल - जो आणविक संयंत्र हैं, उन पर भी पाबंदी लगनी चाहिए और उस ओर भी ध्यान देना चाहिए। जंगल में पेड़-पौधों के जलने से, कोयले के जलने से तथा तेल-शोधन कारखानों आदि से निकलने वाला धुआँ - जैसे मथुरा का तेल शोधन कारखाना है, तो उस रिफायनरी से काफी धुआँ निकलता है। यह बार-बार कहा जाता है कि आगरा के ताजमहल का रंग भी फीका पड़ गया है। वहाँ से उसके भट्टे तो हटा दिए गए हैं, किन्तु उसके अंदर कोई ऐसा उपाय नहीं किया

गया है कि वहाँ ऐसे संयंत्र लगाए जाएँ, जिनसे उसका धुआँ कम किया जा सके। इसलिए उस ओर भी ध्यान देना चाहिए।

हवा में अवांछित गैसों की उपस्थिति से मनुष्य, पशुओं तथा पक्षियों को गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इससे दमा, सर्दी, खाँसी, अंधापन, श्रव्य का कमजोर होना तथा त्वचा रोग जैसी बीमारियाँ पैदा होती हैं। लम्बे समय के बाद इससे जननिक विकृतियाँ उत्पन्न हो जाती हैं और अपनी चरम-सीमा पर ये घातक भी हो सकती हैं।

(2आर/एमसीएम पर जारी)

-BHS/DC-MCM/2R/4.20

श्री वीर सिंह (क्रमागत) : वायु प्रदूषण से सर्दियों में कोहरा छाया रहता है, जिसके कारण धुएं तथा मिट्टी के कणों का कोहरे में मिला होना है। इससे प्राकृतिक दृश्यता में भी कमी आती है, इससे आंखों में भी जलन होती है और सांस लेने में कठिनाई होती है। ओज़ोन परत हमारी पृथ्वी के चारों ओर एक सुरक्षात्मक गैस की परत है, जो हमें सूरज से आने वाली हानिकारक Ultraviolet किरणों से बचाती है। वायु प्रदूषण के कारण जीन अपरिवर्तन, अनुवांशकीय तथा त्वचा कैंसर के खतरे बढ़ रहे हैं। वायु प्रदूषण के कारण पृथ्वी का तापमान बढ़ा है, क्योंकि बारिश के पानी में सल्फर डाईऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड आदि जैसी जहरीली गैसों के घुलने की संभावना बढ़ी है। इससे फसलों, पेड़ों, भवनों तथा ऐतिहासिक इमारतों को नुकसान पहुंच सकता है। ....(समय की घंटी)..... महोदय, मैं अब बस एक मिनट लूंगा।

हमारी केन्द्र सरकार ने, माननीय प्रधान मंत्री जी ने स्वच्छ भारत अभियान का नारा लगाया है। मेरा सुझाव है कि दिल्ली के अंदर जो सफाई कर्मी हैं, आज भी वे झाड़ू से सफाई करते हैं और उससे धूल उड़ती है, जिससे उन लोगों में टी0बी0 का रोग बढ़ रहा है। स्वच्छ भारत तब ही होगा जब हम सफाई कर्मियों को अच्छे यंत्र मुहैया कराएंगे। महानगरपालिका और नगरपालिका को हम उनको समुचित सुविधाएं देंगे, जबकि अभी सुविधा के नाम पर कुछ नहीं है। आज दिल्ली के अंदर सफाई कर्मियों में टी0बी0 का रोग इतना बढ़ रहा है, लेकिन उस ओर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। गटर में घुसने के कारण वे लोग वहां जहरीली गैस के कारण मर रहे हैं, उस ओर भी कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। तो मेरा निवेदन है कि स्वच्छ भारत तभी होगा जब सफाई कर्मियों की तरफ ध्यान दिया जाएगा। उनको सफाई यंत्र मुहैया कराए जाएं तथा वायु प्रदूषण को रोकने के लिए इस ओर ध्यान दिया जाए। दूसरा, जैसे कि हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश जो नजदीक के प्रदेश हैं, जैसा कि कहा गया कि वहां पराली जलाने के कारण वायु प्रदूषण होता है। इस पर न्यायालय का भी आदेश आया है, जिसका अनुपालन होना चाहिए। किन्तु इसके साथ-साथ जो बड़े-बड़े जमींदार हैं, जिनके बड़े-बड़े फार्म हैं, वे गिने-चुने लोग हैं, जो पराली जलाते हैं। वे मात्र मुश्किल से 5 या 10 परसेंट लोग होंगे। उन पर शिकंजा कसा जाएगा तो प्रदूषण अपने आप रुक जाएगा। इसके साथ-साथ जब दीपावली पर पटाखे छोड़े जाते हैं, उससे वायु प्रदूषण काफी मात्रा में फैलता है। इस पर इस बार न्यायालय को भी हस्तक्षेप करना पड़ा। तो इस पर भी पाबंदी लगाई जाए।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. Veer Singh*ji*, your time is over. …(Interruptions)…

श्री वीर सिंह : मेरा यही सुझाव है कि हमें इस ओर ध्यान देना चाहिए।….(व्यवधान)….

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please. …(Interruptions)… Please. …(Interruptions)… Okay, it is all right. You have taken five minutes. …(Interruptions)… Please. …(Interruptions)… Okay. …(Interruptions)… No more. …(Interruptions)… All right. …(Interruptions)…बैठिए।….(व्यवधान)….

श्री वीर सिंह : जो अस्पताल हैं, रेलवे स्टेशन हैं, वहां पर इतनी भीड़ रहती है, अगर हम देखें कि जो आबादी दिल्ली की 20 साल पहले थी, उससे अब दस गुना बढ़ गई है, किन्तु समुचित व्यवस्था शौचालयों की नहीं की गई है। खुले में अभी भी लोग शौच करते हैं तो उसके कारण से वायु में प्रदूषण होता है। तो दिल्ली सरकार को, केन्द्र सरकार को मिल कर के इस ओर ध्यान देना चाहिए। दूसरा, जो…..(व्यवधान)…..

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. That is all. …(Interruptions)… Nothing more will go on record. …(Interruptions)…

श्री वीर सिंह : जो लोग नदी, नालों के किनारों पर बसे हुए हैं और वे मजबूर हैं खुले में शौच करने के लिए, उनके लिए कोई शौचालय नहीं है, उनको मकान देना चाहिए, जिससे कि प्रदूषण रुके। तो इस ओर उनको टॉयलेट्स बनाकर देना चाहिए। यह मेरा सुझाव है, इस ओर सरकार को ध्यान देना चाहिए दिल्ली को स्वच्छ रखने के लिए और वायु प्रदूषण रोकने के लिए। धन्यवाद।

(समाप्त)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Nothing more will go on record. …(Interruptions)… Now, Shri D. Raja. Mr. Kashyap, डी0 राजा जी के बाद हम आपको बुलाएंगे, because Raja is *Raja*. …(Interruptions)…

SHRI D. RAJA: Sir, I have some programme also. …(Interruptions)…

MR. DEPUTY CHAIRMAN: But Mr. Raja has only three minutes. You can take three plus one, four minutes.

SHRI D. RAJA (TAMIL NADU): Thank you, Sir. We are discussing a very serious issue which is a global issue. According to the *Dialectics of Nature,* there should be a balance among land, air, water and people. This balance is disturbed by the greed and profit-seeking by some classes, some forces in the world. Sir, at this point of time, I would like to compliment activists like Sunita Narain and journals like *Down To Earth*, who are trying to create public awareness on these issues- pollution, environment protection, ecological damage, global warming, climate changes, etc. Sir, the point is how we address this issue. (Contd. by RSS/2S)

RSS/2S/4.25/

SHRI D.RAJA (CONTD.): I understand my good friend, Shri Harsh Vardhan, is a doctor. Air pollution is a health issue. The damage to human health

because of toxins in air should not be under-estimated. There is a study done in Delhi which shows that Indian children are growing with smaller lungs. When they become adults, in fact, their lungs become ten per cent smaller than the normal lungs. It is a serious health issue, and the Government should address it as a health issue. It concerns the future of our own children.

Sir, the second point is that it is not an issue only confining to Delhi. Of course, Delhi is the national capital, the most polluted city, but, air pollution is not an issue of Delhi alone. Almost, all our cities are affected by air pollution. We do not have the monitoring stations of air pollution in all cities. Only a few cities do have the air pollution monitoring stations, and people do not get to know what to do, what not to do, and this is a kind of silence of conspiracy, and we should tell our people, enlighten our people about this.

The third point is that there are five critical areas which actually become source of pollution. Number one is vehicles. These vehicles which are using the trucks, diesel vehicles, as well as the growing numbers of nuggets, this is one critical area, which is the root cause for pollution. Then, combustion in power plants and industries, using dirty fuels, like, petcoke, and F.O.R. Disvariants, coal and biomass. And third one is, garbage burning, both in landfills and other places, where there is no collection,

processing and disposal. The fourth one is, dust management. When I say dust management, it means construction sites as well as roads. We fail to really manage the dust. Then, Sir, the fifth one is, the crop residue burning. These are the five broad critical areas which remain to be the source of pollution. I hope, the Minister agrees with me. Then, what should he do now to control the pollution? I think, first of all, we must encourage the public transport, massive augmentation of public transport, which can reduce the private cars and other things. The other issue is, massive move towards clean fuel. By clean fuel, I mean, natural gas, electricity from cleaner sources, and renewable energy. Sir, here, I must point out, and you will appreciate that India is importing petcoke from countries, like, the United States of America. It really causes pollution. In fact, this is making our country as a dustbin of the world, and is adding to our pollution, and the Government will have to reconsider this issue, import of petcoke from countries, like, US. Then, Sir, there are massive efforts to enforce and implement directions for not burning garbage and dust management. Then, finally, massive efforts to subsidize our farmers to improve and promote the technologies that will allow them to re-plough the straws left over on the field to get into the ground once again. This technology is available. How to promote that technology? The Government will have to subsidize our

farmers. It is of no use blaming our farmers for burning down their crops or residues of crops. These are suggestions for pollution control. Thank you.

(Ends)

(followed by 2T)

KGG-GS/2T/4.30

श्री राम कुमार कश्यप (हरियाणा) : उपसभापति महोदय, आज मुझे ऐसा लग रहा था कि मुझे इस चर्चा में भाग लेने का मौका नहीं मिलेगा। चर्चा में भाग लेने की अनुमति लेने के लिए मैं आपके पास आया था, लेकिन आपने अनुमति नहीं दी थी। मैं आपसे नाराज़ था। अंत में, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं सिर झुकाकर आपका धन्यवाद अदा करता हूं।

श्री उपसभापति : आप मेरी बात समझिए। आपने कोई चिट मेरे हाथ में नहीं देनी है, आपने चिट उधर देनी है।

श्री राम कुमार कश्यप : सर, मैं तो आपके पास भी गया था।

श्री उपसभापति : मुझे नहीं देनी है।

श्री राम कुमार कश्यप : सर, मैं सिर झुकाकर आपका धन्यवाद अदा करता हूं।

श्री उपसभापति : नहीं, नहीं।

श्री राम कुमार कश्यप : सर, जहां तक दिल्ली में प्रदूषण की बात है।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please don't bow before anybody, including me. You are a person like me and be straight. Actually, the slips should be given to the officials of the Secretariat. That is why I did not accept it. Now you

have nine minutes to speak, which is more than the time given to anybody else.

श्री राम कुमार कश्यप : थैंक यू सर। जहां तक दिल्ली में पर्यावरण दूषित होने की बात है, तो आज दिल्ली में पर्यावरण बहुत दूषित हो गया है। यह हमारे लिए, हमारे देश के लिए, हमारी सरकार के लिए बहुत चिंता का विषय है और यह एक बहुत बड़ी चुनौती हमारे सामने है। इस प्रदूषण के कारण हर साल दस हजार व्यक्तियों की समय से पहले मृत्यु हो जाती है। यह बहुत ही चिंता का विषय है। इसी प्रदूषण के कारण बीजेपी के एक नेता कैलाश विजयवर्गीय जी के दो साल में सिर के आधे बाल उड़ गए हैं, यह भी एक बहुत बड़ी चिंता का विषय है। कोस्टारिका देश के राजदूत दिल्ली में रहने के लिए आए, परन्तु वे प्रदूषण के कारण दिल्ली छोड़कर बेंगलुरु चले गए। यह भी बहुत ही चिंता का विषय है। प्रदूषण के कारण दिल्ली के स्कूलों में बच्चों की छुट्टियां करनी पड़ीं, यह भी चिंता का विषय है। एक स्टडी के अनुसार अगर WHO के एक वर्किंग स्टैंडर्ड को अपना लिया जाए, तो हम हर एक नागरिक की औसत आयु 9 साल बढ़ा सकते हैं। इसलिए यह बहुत ही चिंता का विषय है और सरकार को इसकी तरफ विशेष ध्यान देना होगा।

उपसभापति महोदय, मैं इसके बारे में दो-तीन सुझाव देकर अपनी बात को खत्म करूंगा। आज दिल्ली में जो प्रदूषण हो रहा है, वह हरियाली की कमी के कारण हो रहा है। इसलिए हमें हरियाली की तरफ विशेष ध्यान देना होगा, दिल्ली में पेड़ लगाने होंगे। इसके अलावा एक चिंता और है। दिल्ली में बहुत सारे बंदर हैं, जो एक भी पेड़ को उगने नहीं देते हैं। यह भी एक बहुत बड़ा चिंता का विषय है। इन बंदरों का दिल्ली में बहुत

आतंक है। कोई भी व्यक्ति अपने घर के बाहर कपड़ों को सुखा नहीं सकता है, क्योंकि बंदर उनको उठा ले जाते हैं। मैं एक दिन सुबह सैर करके आया और मैंने अपने जूते बाहर उतार दिए। बंदर मेरे जूते को उठाकर ले गया और वह जूता मुझे किसी दूसरे एम0पी0 के घर में मिला। यह बहुत ही चिंता का विषय है, इसलिए बंदरों के बारे में भी आपको सोचने की जरूरत है। अगर बंदरों की तरफ ध्यान देंगे, तो कुछ पेड़, पौधे बच जाएंगे अन्यथा नये पेड़, पौधे नहीं लग पाएंगे। पेड़ लगाने में सबका सहयोग जरूरी है, इसमें जनता का सहयोग भी बहुत जरूरी है और इसमें सरकार का सहयोग भी बहुत जरूरी है। मैं तो पहले भी कहता रहा हूं और आज भी कह रहा हूं कि हम में से हर एक आदमी को एक पेड़ जरूर लगाना चाहिए, one man और one tree उनको लगाए। केवल पेड़ ही न लगाए, बल्कि उनको मेन्टेन भी करे।

उपसभापति महोदय, मैं माननीय मंत्री जी के ध्यान में लाना चाहता हूं कि पेड़ तो बहुत लगते हैं, लेकिन उनको आवारा पशु बढ़ने नहीं देते हैं। इसलिए इसकी तरफ भी सरकार को विशेष ध्यान देना होगा। माननीय मंत्री जी, मैं आपको बताना चाहता हूं कि पानीपत और सोनीपत एनसीआर में आता है और मैं वहां से आता हूं। पानीपत और सोनीपत के बीच में पेड़ लगाने के लिए हजारों की संख्या में ट्री गाड्र्स लगवाए गए हैं, परन्तु उनमें एक भी पेड़ नहीं लगाया गया है। यह इन्क्वायरी का विषय है और माननीय मंत्री जी इसकी इन्क्वायरी करवाएं कि इन ट्री गाड्र्स को लगवाने में कितना खर्चा आया और इनमें पेड़ क्यों नहीं हैं? एक बात और है, वह यह है कि सड़क चौड़ी हो रही है, उसके बाद इन ट्री गाड्र्स का क्या होगा और ये कहां जाएंगे, इस पर भी सरकार को विचार करना होगा।

उपसभापति महोदय, आज कूड़ा जलाने से भी प्रदूषण बढ़ रहा है। जितने भी संस्थान हैं, दफ्तर हैं, वे अपने कूड़े में आग लगा देते हैं और उसके कारण भी हमारे यहां प्रदूषण बढ़ता है। विशेष रूप से जो हमारे राष्ट्रीय राजमार्ग हैं, उन पर हर रोज कहीं न कहीं कूड़े में आग लगी होती है और आग को बुझाने के लिए कोई प्रबंध नहीं है। अगर पेड़ों को बचाना है, हरियाली को बढ़ाना है, तो जो आग लगती है, उसको बुझाने के लिए कोई न कोई प्रावधान करना होगा।

उपसभापति महोदय, आज हम दिल्ली की बात कर रहे हैं और जब हम दिल्ली से हरियाणा जाते हैं, बीच में जो करनाल बाईपास है, उसके राइट हैंड पर डेली कूड़ा इकट्ठा कर दिया जाता है और उसमें लगातार आग लगी रहती है, इसको हम कई सालों से देख रहे हैं। वहां पर कूड़े में से धुआं निकल रहा है, जिसके कारण पता नहीं कितनी बीमारियां फैल रही हैं और वह पर्यावरण को दूषित कर रहा है। इसलिए मेरी सरकार से मांग है कि उसकी तरफ भी विशेष रूप से ध्यान दिया जाए।

सर, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिंद, जय भारत!

(समाप्त)

(HMS-2U पर आगे)

SSS-HMS/2U/4.35

श्री उपसभापति : धन्यवाद, कश्यप जी। आप बहुत अच्छा बोले।

श्री प्रताप सिंह बाजवा (पंजाब) : डिप्टी चेयरमैन साहब, बहुत-बहुत शुक्रिया। यह सारे देश के लिए एक महत्वपूर्ण इश्यू है, जिस पर बोलने के लिए मुझे पार्टी ने मौका दिया है।

सर, मुझे आज आजादी के परवाने याद आ रहे हैं, जिन्होंने देश की आजादी से पहले एक सपना देखा था और कहा था,

"सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा,

हम बुलबुले हैं इस की, यह गुलश्तिां हमारा।"

डिप्टी चेयरमैन साहब, हर हिंदुस्तानी, चाहे वह किसी जमात, किसी पार्टी से ताल्लुक रखता हो, सभी का यह सपना होता है कि हमारा देश सारी दुनिया में एक मजबूत और खूबसूरत देश बने और हर देश का जो सब से important place उस की capital होती है, वह basically ऐसी जगह होती है, जिस से देश की तरक्की के मापदंड देखे जा सकते हैं। दिल्ली हिंदुस्तान का jewel in the crown है, मगर आज मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है जबकि इसी शहर में राष्ट्रपति जी, उपराष्ट्रपति जी, प्रधान मंत्री, कैबिनेट के मेंबर्स, Members of Parliament, हमारे बुजुर्ग, हमारे नौजवान बच्चे सब इकट्ठे रहते हैं और हम elitist club को join करने की बात करते हैं, लेकिन जब अपना खुद का capital ऐसा है कि सही मायने में हमारा सिर शर्म से झुक गया जब श्रीलंकन्स हमारे यहां क्रिकेट मैच खेलने आए, तो one day match में वे और हमारे खिलाड़ी मास्क लगाकर खेलते रहे। सर, श्रीलंकन्स ने हिंदुस्तान के उस ग्राउंड पर, जो एक मशहूर क्रिकेट ग्राउंड है, मैच खेलने से इंकार कर दिया। Is it not a national shame, Sir?

हमारे बहुत सारे साथियों ने अपने views यहां रखे हैं और सरकार भी वाकिफ है कि दिल्ली को क्या-क्या जरूरत है। महोदय, मैं उन आंकड़ों में नहीं जाना चाहता, लेकिन यह बात बिल्कुल सही है कि आज दिल्ली एक gas chamber बनकर रह गयी

है और जैसा कि मेरे एक साथी ने कहा कि World Health Studies ने यह साबित किया है कि हिंदुस्तान में जो pollution का level चल रहा है, उस से 25 लाख से ज्यादा लोग हर साल दम तोड़ देते हैं। सर, हो सकता है कि इतने लोग तो हिटलर के gas chamber में नहीं मरे होंगे।

सर, मैं पंजाब से ताल्लुक रखता हूं और वहीं से राज्य सभा में पहुंचा हूं। आज किसान आत्महत्या कर रहा है और दूसरी तरफ हमारी Green Tribunal यह कह रही है कि अगर वे अपनी पराली को आग लगाते हैं, तो उन पर केस रजिस्टर कर जेल के अंदर किया जाए। सर, यह कोई रास्ता नहीं है। मेरी मंत्री महोदय से गुजारिश है कि नीति आयोग ने एक ब्यूरोक्रेट की अध्यक्षता में एक कमेटी से स्टडी करवायी और उन्होंने कहा कि पंजाब, हरियाणा और यू0पी0 के वेस्टर्न पार्ट में साढ़े ग्यारह हजार करोड़ रुपए का खर्च आएगा। सर, यह एक बहुत important parameter है। अगर हम यह चीज रोक दें, तो pollution कम-से-कम 100 परसेंट नीचे आ सकता है। सर, हर्ष वर्धन जी खुद एक डॉक्टर हैं, उन्होंने कहा कि अगर पराली को आग न लगे तो 100 परसेंट pollution level नीचे आ जाता। हर्ष वर्धन जी, मैं खुद एक किसान हूं और हमारे बहुत से भाई, जो खुद किसान हैं, वे जानते हैं कि अगर पराली को आग न लगायी जाए तो 3 से 5 हजार प्रति एकड़ का खर्चा आता है क्योंकि उस के लिए labour लगती है, डीजल लगता है, उसके लिए आपको agricultural implements लेने पड़ते हैं, नयी technology लेनी पड़ती है। यह सब अकेला किसान नहीं कर सकता - न पंजाब का, न हरियाणा का और न western U.P. का।

(2 डबल्यू/एलपी पर जारी)

LP-NBR/4.40/2W

श्री प्रताप सिंह बाजवा (क्रमागत) : मेरी गुजारिश है कि ये पैसे कोई ज्यादा पैसे नहीं हैं। आज़ाद साहब, एक तरफ तो हम राफेल जेट की बात कर रहे हैं, हम 1600 करोड़ में एक जेट ले रहे हैं और दूसरी तरफ इस समस्या से जूझ रहे हैं। हमें पाकिस्तान से जंग हुए पचास साल हो गए हैं, पर यह तो कुदरत ही जाने कि यह जंग कब बंद होगी या नहीं होगी। हमारी यह जंग चल रही है। उधर हमारे बच्चों की, बुजुर्गों की जंग चल रही है, इधर हमारी यह कैपिटल रहने के काबिल नहीं है। मेरी यह विनती है, गुजारिश है कि नीति आयोग ने कंपन्सेट करने का यह जो पैरामीटर बनाया है, वह है सौ रुपये पर फी क्विंटल पैडी पर बनाया है। एक किस्म से जैसे आप कहते हैं कि बोनस देने का बनाया है। उन्होंने साथ में यह भी बात कही है कि 70 हजार पंचायतें हैं, जिन्हें हम दस-दस लाख रुपये देंगे। जहाँ यह आग नहीं लगाई जाएगी, वहाँ हम उन्हें कंपन्सेट करेंगे। मेरा कहना है कि सौ रुपये की बजाय instead of paying farmers Rs. 100 per quintal as bonus on paddy, जरूरी है कि आप उसको दो सौ कीजिए और जिस पंचायत को दस लाख देने हैं, उसकी बजाय उसको पाँच लाख दिए जाएं। पैसे भी उतने ही लगेंगे, किसान कंपन्सेट होगा और मैं आपको यकीन दिलाना चाहता हूं on the floor of this House कि हिंदुस्तान का कोई किसान आग लगाने को तैयार नहीं है, क्योंकि उनके भी बच्चे हैं। आज पंजाब में, हरियाणा में वही हालात हैं, जो दिल्ली में हैं। आज पंजाब में वैसे ही हालात पैदा हुए हैं। वहाँ बीमारियाँ हैं। सर, पंजाब में हमें इस दफा, गवर्नमेंट को स्कूल बंद करने पड़े। यह दिल्ली में भी हुआ, पंजाब में भी हुआ। यह इस स्मॉग की वजह से, पॉल्युशन की वजह से हुआ और अनेकों जानें गईं। सर, इतनी कारों

के एक्सिडेंट्स, टैक्टर्स के एक्सिडेंट्स, बाइक्स के एक्सिडेंट्स हो रहे हैं, पर उनकी गिनती की तो इधर किसी ने बात ही नहीं की। मेरी यह गुजारिश है कि ग्यारह या साढ़े ग्यारह हजार करोड़ रुपये ज्यादा नहीं हैं। जो स्टडी यह साबित करती है, उसके मुताबिक इसके चार बेसिक पैरामीटर्स हैं। आईआईटी कानपुर ने एक स्टडी की, उन्होंने यह बताया कि ये जो चार बेसिक पैरामीटर्स हैं, उनमें नंबर 1 पर है, vehicle pollution in Delhi. It contributes 50 per cent pollution. यह पॉल्युशन का परसेंट चल रहा है। कंस्ट्रक्शन, डस्ट की वजह से पचास परसेंट, दिल्ली का जो म्युनिसिपल वेस्ट है, वह सौ परसेंट और जो स्टबल बर्निंग है, सौ परसेंट इसके साथ भी है। मैं समझता हूं कि यह जो सौ परसेंट की डिग्री है, यह नीचे आ सकती है, अगर हम फार्मर्स को कंपेनसेट कंपन्सेट करें, इसलिए मैं आपसे यह गुजारिश करना चाहता हूं कि इस लड़ाई में हम सभी गवर्नमेंट के साथ हैं। यह हिंदुस्तानियों की लड़ाई है। यह एक सरकार की लड़ाई नहीं है। यह न आपकी है, न बीजेपी की है, न कांग्रेस की है, न ही किसी और पार्टी की लड़ाई है। आज हमें अपना वातावरण ठीक रखना है।

महोदय, हम बड़े-बड़े देशों की बात कहते हैं। आज की सरकार भी बाहर से इंडस्ट्रियलिस्ट्स को बुला रही है कि, आप आओ और हिंदुस्तान में काम शुरू करो। सर, हिंदुस्तान में आएगा कौन? श्रीलंकन चले गए, अमेरिकन गवर्नमेंट के जो बोइंग इधर आते हैं, उन पर पाबंदी लगा दी है। वेस्टर्न वर्ल्ड में जो टूरिज्म का काम है, उसमें बाकायदा तौर पर एक एडवाइज़री इश्यू कर दी गई कि हिंदुस्तान इन दिनों आने या जाने के काबिल नहीं है। हमारे मंत्री जी से, एन्वायरमेंट के मिनिस्टर साहब से मेरी यह विनम्र विनती है कि आप जो मरज़ी कीजिए, मैं समझता हूं कि गवर्नमेंट को एक नेशनल

कैंपेन चलाना चाहिए। हम सारी पार्टियाँ जितना जोर अपने इलेक्शन्स पर लगाती हैं, अगर इसका आधा भी लगा देंगे, तो दिल्ली साफ हो जाएगी। हम जितना जोर propaganda पर लगाते हैं, बाकी कामों पर लगाते हैं, यदि एक national awareness campaign चलाएं, तो अच्छा होगा। जैसे टूरिज्म में, मेरे ख्याल से आपके पास यह डिपार्टमेंट रहा था, इसमें इनक्रेडिबल इंडिया से हिंदुस्तान को बहुत लोगों में, बाहर भी लोगों में पॉप्युलर किया था, Why don't you start with some kind of national campaign under the name of Incredible Delhi? दिल्ली के लिए 40, 50 हजार करोड़ रुपये खर्चना कोई मुश्किल काम नहीं है, मगर इसके लिए गवर्नमेंट का मन होना चाहिए। आप आप से कहेंगे, आप वाले लेफ्टिनेंट गवर्नर से कहेंगे, लेफ्टिनेंट गवर्नर होम मिनिस्टर से कहेंगे, या हम आपसे कहेंगे, आप हमें कहेंगे, ऐसे तो बिल्कुल काम नहीं चलेगा। अब जरूरी यह है कि as a national awareness campaign हम सभी इकट्ठे हों और सारी दुनिया को यह साबित करके दिखाएं कि हिंदुस्तान को खूबसूरत करने के लिए, दिल्ली को खूबसूरत करने के लए हम अपने सारे सियासी मतभेद भूलकर देश के लिए और अपनी कैपिटल के लिए एकजुट हैं। मैं इतना ही कहता हूं और हर्ष वर्धन जी, मेरी गुजारिश है कि आप फार्मर्स को कंपन्सेट करो। अगर नहीं करेंगे, तो अगले साल फिर यही होगा। आप केसेज़ के साथ, डराने के साथ जितनी मरज़ी कोशिश कर लीजिए, लेकिन ये जो हमारे किसान हैं, ये रुकने वाले नहीं हैं। इनको तो प्यार से मनाइए और कंपन्सेशन दीजिए। मैं आपको यकीन दिलाना चाहता हूं..।

(klg/2x पर जारी)

श्री प्रताप सिंह बाजवा (क्रमागत): आज पंजाब में भी, हरियाणा में भी, दिल्ली में भी बच्चे पढ़-लिख चुके हैं, कोई किसी को आग नहीं लगाने देगा, आप उनको फाइनेन्शियली कंपनसेशन दे दीजिए। मैं ज्यादा न कहते हुए, डिप्टी चेयरमैन साहब, आपका बहुत आभारी हूँ कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया। मैं मंत्री जी से गुजारिश करूंगा कि कृपा कीजिए। आपने थोड़े से बाजू जो अंदर रखे हुए हैं, उनको बाहर निकालिए, क्योंकि इससे ऐसा लगता है कि कुछ भी नहीं बन सकेगा, मेरे वश की बात नहीं है। यह बैठने का तरीका कुछ ऐसा है, उसमें यह होता है कि दोनों हाथ रख लिए कि भाई, मेरे वश की तो बात नहीं, जितना मर्जी बोलते रहो। मैं साथ वाले कश्यप साहब से गुजारिश करना चाहता हूँ, in a lighter vein, कि अगर कोई बंदर आगे से भी जूता उठा कर ले जाए, तो यह भी ध्यान रखना कि किसी गलत घर में लेने मत चले जाना। यह भी एक बड़ी खतरनाक चीज होती है। तो मैं इतना ही कहते हुए आपका बहुत-बहुत मशकूर हूँ और थैंक्स करना चाहता हूँ।

(समाप्त)

डा. सत्यनारायण जटिया (मध्य प्रदेश): माननीय उपसभापति जी, दिल्ली में प्रदूषण की परेशानियों से किस तरह से निजात पायी जाए, जिससे लोगों के जनजीवन, स्वास्थ्य पर और रोजमर्रा के कामों पर उसका असर न पड़े, यह विषय दिल्ली को लेकर है, परन्तु यह हमारे देश और दुनिया में भी लागू होता है। इन सर्दियों में अखबारों में समाचार छपे कि स्मॉग चैम्बर में दिल्ली तब्दील हुई, 469 तक वायु गुणवत्ता का इंडेक्स पहुंच गया। यह कोई एक दिन में हुआ होगा, ऐसा नहीं है। मैं दिल्ली में 1980 से हूँ, सातवीं लोक सभा से चुन कर आता रहा हूँ। मैंने दिल्ली को बहुत स्वच्छ देखा है,

अच्छा देखा है, पार्लियामेंट के आसपास के पर्यावरण को भी अच्छा देखा है। समय के साथ-साथ यह प्रदूषण बढ़ता गया है। इसके रोकथाम के उपाय हमें ज्यादा तेजी से करने होंगे, क्योंकि यह एक मर्ज है। कहीं ऐसा न हो कि हमने दवा की और मर्ज़ बढ़ता जाए। इसके पर्याप्त उपाय करने होंगे। डा. हर्ष वर्धन जी बैठे हैं, निश्चित रूप से ये स्वास्थ्य के बारे में और दिल्ली के बारे में ज्यादा जानते हैं। मैं यह कह सकता हूँ कि यह बात जो दिल्ली की है, यह सारे देश की है। इस काम को करने के लिए हमने बहुत सारे उपाय भी किए हैं। यह पर्यावरण का स्तर जो दिल्ली का है, जैसा कहा गया था कि दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में वायु की गुणवत्ता का स्तर एक बार फिर सीवियर, यानी बहुत गंभीर हो गया है। दिल्ली का अधिकतम एक्यूआई 469, जबकि गाजियाबाद और नोएडा का एक्यूआई अधिकतम 500 स्तर का रिकॉर्ड किया गया। पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रण प्राधिकरण ने भी दिल्ली और एनसीआर के सभी राज्यों को सतर्क कर देने के निर्देश दिए थे। तो यह बात फॉग से अलग है। फॉग तो होता ही रहता है, जब सर्दी के दिनों में ठंड हो जाती है। इसमें नियंत्रण करने के लिए हम उपाय भी करते हैं। उससे रेलगाड़ियों की रफ्तार रुक जाती है, हवाई जहाजों का उतरना-चढ़ना प्रभावित हो जाता है, इन सारी बातों का हमें अंदाज है, लेकिन जब डस्ट पार्टिकल्स, जिनका आकार बहुत छोटा, न्यून होता है, वे उसमें मिल जाते हैं और धुंए के कण, जो छोटे होते हैं, उसमें मिल जाते हैं और ये जितने ज्यादा बढ़ते जाते हैं, उतना खतरा बढ़ जाता है, तो इसको कैसे कम किया जाए, इस पर उपाय करने की जरूरत है। इसलिए इससे बचाव के हम क्या-क्या उपाय कर सकते हैं? यह राज्य सरकार का मामला होगा, केन्द्र सरकार का मामला होगा, लेकिन यह आदमी की जिंदगी का भी मामला है। हम आदमी

को कैसे स्वस्थ और सुरक्षित रख सकते हैं, इसके लिए हमें प्रभावी उपाय करने की आवश्यकता है। इसके लिए बिजली घरों से निकलने वाले धुएं, जैसा हम जानते हैं कि कोयले के बिजली घर से जो धुआं निकलता है, उसकी जो गैस निकलती है, कारखानों से जो सल्फर डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन निकलती है, उससे निकलने वाली गैसेस फेफड़ों को खराब करती है, जिससे बड़ा नुकसान हो जाता है। इनमें एसेडिक कैरेक्टर भी होता है, जिनसे गैसेज़ की भी प्रॉब्लम्स बढ़ जाती हैं।

(2वाई/एकेजी-पीके पर जारी)

AKG-PK/2Y/4.50

डा. सत्यनारायण जटिया (क्रमागत) : ये सारी बातें स्वास्थ्य से सम्बन्धित भी हैं और दिल्ली का स्वास्थ्य अच्छा रहे, यह जरूरी है। इसके लिए सब प्रकार से उपाय करने चाहिए।

हमने प्रदूषण का स्तर मापने के उपाय भी किए हैं। हमारी दिल्ली में भी इसको लागू करने के लिए काफी प्रयास किए गए हैं। इस सम्बन्ध में विदेशों में भी काफी उपाय किए जाते रहे हैं। उन उपायों के अन्तर्गत निश्चित रूप से हमने जितने उपाय किए हैं, हमने देखा है कि जो स्टेशंस बनाए जाते हैं, जिनसे हम इसका मापन करते हैं, इनको और बढ़ाने की आवश्यकता है। लेजर लाइट के माध्यम से भी इसको नियंत्रित करने के उपाय किए जाते हैं। इस तरह से इसकी जाँच करने के उपाय करने की आवश्यकता है। जाँच तो हम सब प्रकार की कर रहे हैं, किन्तु इन जाँचों से हमें क्या लाभ मिलने वाला है, इस पर ध्यान देना होगा। इसका उपचार कैसे किया जाए? हमारे यहाँ NGT है, वह हमेशा सलाह देता रहता है कि यह करना चाहिए, वह करना चाहिए। इसको

लागू करने के लिए जो उपाय करने चाहिए, उसके बिना उसके फैसले लागू नहीं होने के कारण वे अप्रभावी हो जाते हैं। हमारा पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रक प्राधिकरण भी है, वह समय-समय पर हमें चेतावनी देता रहता है, बात बताता रहता है। फिर Graded Response Action Plan है, जिसके तहत क्या उपाय करने चाहिए, यह बताया गया है, जैसे Even and Odd, इस प्रकार से गाड़ियाँ चलानी चाहिए, गाड़ियों को कम करना चाहिए। अब चाहिए तो सभी कुछ, परन्तु यह होगा कैसे, इसके बारे में यदि सब मिल कर बात करें, तो अच्छा होगा।

अभी एक सुझाव आया था कि इसमें लोगों को साझीदार बनाना चाहिए। Public participation is a must. किस तरह से हम लोगों को इसके बारे में जागरूक कर सकें, इस पर हमें ध्यान देना चाहिए। इसलिए जैसे हमने देश में स्वच्छता अभियान चलाया है, जिसके कारण आज आदमी कहीं भी कचड़ा फेंकने के बारे में सोचता है, उसी प्रकार से हमें पर्यावरण के बारे में भी जागरूकता अभियान चलाने की आवश्यकता है। यदि कहीं ज्यादा प्रदूषण हो रहा है, तो उसको रोकने के लिए हमें उपाय करने चाहिए। कानून बने हुए हैं, किन्तु उनका प्रभावी उपयोग नहीं हो पाता है। जहाँ जल प्रदूषण होता है, वायु प्रदूषण होता है और ध्वनि प्रदूषण होता है, उसके लिए सारे नियम हैं, कानून हैं, परन्तु इनको प्रभावी रूप से लागू करने के लिए हमारी जो एजेंसीज़ हैं, उनके और प्रभावी होने की आवश्यकता है। इसीलिए इन सारे कामों को करने के लिए हम इस तरह से काम करना चाहेंगे। जैसे मैंने कहा था कि हमारे यहाँ दिल्ली में 38 Air Quality Monitoring Stations हैं, जबकि लंदन में 115 स्टेशंस बनाए गए हैं। इसलिए जाँच के स्तर पर बात करने के लिए हम और स्टेशंस बना सकते हैं। पुलिस और

ट्रैफिक पुलिस भी प्रदूषण नियंत्रण में अपना योगदान दे सकते हैं। प्रदूषण नियंत्रण से जुड़े हुए जो लोग हैं, वे भी इसके लिए गाड़ियों की जाँच करते रहते हैं कि उनसे ज्यादा प्रदूषण तो नहीं हो रहा है। वे गाड़ियों को 'प्रदूषण मुक्त vehicle' का एक लेवल देकर सर्टिफिकेट देने का काम करते हैं। ये सारी बातें हैं, जिनको ठीक प्रकार से लागू करने की आवश्यकता है। इसलिए यह जो हमारे पर्यावरण का काम है, इसको बहुत प्रभावी तरीके से लागू करने के लिए हमें विविध प्रकार के उपाय करने होंगे, तब जाकर हमें इस समस्या से निजात मिलेगी।

हम जानते हैं कि यह जो सफाई का कचड़ा है, अब यह काम गाँवों में ग्राम पंचायत किया करती है, नगरों में नगरपालिकाएँ करती हैं, कार्पोरेशंस किया करते हैं, परन्तु संसाधन के अभाव के कारण जगह-जगह उस कचड़े को जलाने का काम होता है। अब अगर उसे जलाएँ नहीं, तो फिर उठाएँ कैसे? जहाँ-जहाँ अच्छी व्यवस्थाएँ हैं, वहाँ प्रदूषण कम भी होता है। परन्तु इसको प्रभावी रूप से, सार्वदेशिक रूप से लागू करने के लिए हमें इस पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि मनुष्य की जिन्दगी बहुत ज्यादा भी नहीं है और बहुत कम भी नहीं है। मनुष्याणाम् नराणाम् आयु: वर्षम् शतम् परमितम्। 100 वर्ष की आयु हो, ऐसा हमारे यहाँ कहा गया है। अब सौ वर्ष तक कौन जीता है! इसलिए पर्यावरण की शुद्धि करने के बाद ही हम आश्वस्त हो सकते हैं कि इस प्रकार से हमारी जो longevity है, हमें अपनी जिन्दगी में जितनी उम्र मिली है, उसको हम ठीक प्रकार से बिताने के लिए उपाय कर सकें। वैसे भी इस विषय पर किसी का विरोध नहीं है।

"मुख्तसर सी है यह जिंदगी काम करने के लिए,

वक्त लाते हैं कहाँ से लोग विरोध करने के लिए।"

ऐसे विषयों पर तो किसी का विरोध होना ही नहीं चाहिए। इसलिए हम सब मिल कर इसके लिए उपाय करें, जैसा नरेश जी बोला करते हैं कि हम सब मिल कर करें, तो मिल कर करते हुए कभी तो दिखाई देना चाहिए।

श्री नरेश अग्रवाल : हम कहाँ इसका विरोध कर रहे हैं?

डा. सत्यनारायण जटिया : विरोध कोई नहीं करता है, परन्तु करते हैं। विरोध करने के अपने-अपने तरीके हैं। इन सारे कामों को करने के लिए हमें जिस तरह के उपाय करने हैं, उनके लिए हमें प्रयास करना चाहिए।

निश्चित रूप से यहाँ फसल के बारे में कहा गया है। किसान परंपरागत रूप से फसल को जलाता आ रहा है, क्योंकि इसमें उसको ज्यादा परिश्रम नहीं लगता, फिर श्रमिकों की बातें हैं। इस प्रकार की मशीनें ईजाद नहीं हुईं। अब मशीनों से कटाई होती है और डंठल रह जाते हैं। इससे किसान का खर्च बढ़ता है, परेशानी बढ़ती है और इसमें टाइम लगता है। पहले तो दराँती से फसल काटते थे, तो उसे नीचे से भी काटा जा सकता था।

(2जेड/एससीएच पर जारी)

PB-SCH/2Z/4.55

डा. सत्यनारायण जटिया (क्रमागत) : जैसे-जैसे आधुनिकीकरण आया है, वैसे-वैसे इन चीज़ों को लेकर परेशानियां और भी बढ़ी हैं। इस संबंध में केवल किसान के बारे में किस प्रकार से कहा जा सकता है, गलती केवल उसी की नहीं है। इन सारे विषयों पर

विचार करने के लिए सर्वांगीण रूप से उपाय करना चाहिए। वैसे हमारी सरकार ने इसके लिए बहुत सारे उपाय किए भी हैं। हमारे घरों में जो चूल्हा जलता था, उस चूल्हे के कारण भी प्रदूषण होता था और हमारे देश की महिलाओं को, बहनों को बहुत कठिनाई होती थी। 'उज्ज्वला योजना' के माध्यम से इस सरकार ने तीन करोड़ परिवारों को गैस के चूल्हे और अन्य सहायता देने का काम किया है। लोगों तक सरकारी सहायता और जागरूकता पहुंचाने के इस प्रकार के उपाय हमको निरंतर करने पड़ेंगे, तभी हम इन सारी बातों को कह सकते हैं। जैसा मैंने पहले कहा, इन सारी बातों को पर्यावरण के साथ जोड़ कर देखने और जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता है।

महोदय, पावर हाउसेज़ के बारे में मैं कुछ कहना चाहूंगा। अभी-भी हमारे यहां बिजली का जो उत्पादन है, वह कोयले पर या थर्मल पावर स्टेशंस पर ही निर्भर है। हम ऊर्जा को वैकल्पिक रूप से कैसे उत्पन्न कर सकते हैं, यह हमें देखना होगा। अभी भी हमारे यहां बिजली के उत्पादन की 80 प्रतिशत निर्भरता कोयले पर ही है। इसका विकल्प क्या हो सकता है अथवा नवीन ऊर्जाकरण के क्या सूत्र हो सकते हैं, यह समग्र रूप से समाज की प्रगति और सर्वांगीण विकास के साथ जुड़ा हुआ प्रश्न है। इस प्रश्न का समाधान ढूंढ़ने के लिए हमें संयुक्त रूप से प्रयास करने की आवश्यकता है।

अभी गाड़ियों के बारे में कहा गया। जो भी सम्पन्न परिवार हैं, आज उन सबके पास अपनी-अपनी गाड़ियां हैं। गाड़ियां तो हैं, लेकिन जगह कहां है? हमने मेट्रो बना ली, फिर भी सड़कों पर गाड़ियों के लिए जगह नहीं है। अगर किसी को अभी रेलवे स्टेशन तक की यात्रा करनी हो, तो वह पहुंच ही नहीं पाएगा, उसको रास्ते में ही कहीं उतरना पड़ेगा और दौड़ कर ट्रेन पकड़नी पड़ेगी। इससे यह अंदाज़ा लगाया जा सकता

है कि आने वाले 10 वर्षों में हमारे यहां क्या हाल होगा। अगर किसी को एयरपोर्ट पहुंचना हो, तो कई बार हम ऐसी जगह फंस जाते हैं, जहां से निकलना बहुत ही मुश्किल हो जाता है। इन सारी समस्याओं का हल निकालने के लिए हमें बहुपक्षीय ढंग से सोचना पड़ेगा। जहां-कहीं भी जिस-जिस प्रकार का प्रदूषण हो रहा है, उससे मुक्ति पाने के उपाय हमको निश्चित रूप से ढूंढ़ने होंगे।

इसका एक हल यह है कि हम स्वयं प्रदूषण न करें और आत्मनियंत्रण करने का उपाय करें। हमारे यहां कहा गया है - 'तेन त्यक्तेन भुंजीथा' अर्थात् त्यागपूर्वक भोग किया जाना चाहिए, हालांकि यह बहुत आदर्शवादी बात है। हमें त्याग करना है तो करना ही है, लेकिन त्याग हमसे होता नहीं और भोग से हम मुक्त हो नहीं पाते, फिर भी हमारे ग्रंथों में जो भी उपदेश किए गए हैं, कुल मिलाकर वे आज भी सार्थक हैं। हम न तो स्वयं प्रदूषण करें और न ही प्रदूषण होने दें। हम किसी से जाकर झगड़ा तो नहीं कर सकते कि आप आग मत जलाइए या ध्वनि प्रदूषण मत करिए, लेकिन इसको रोकने का अन्य कोई उपाय नहीं है। प्रदूषण रोकने के कुछ उपाय दिए गए हैं, परन्तु उसमें भी अब प्रदूषण आ चुका है, इसलिए इस मैकेनिज़्म को हमें बार-बार जांचना होगा। जिन लोगों को प्रभावित करने के लिए विभिन्न प्रकार के उपाय किए जाते हैं, ऐसे सामर्थ्यवान लोग फिर भी उन सारी बातों को करते रहते हैं, लेकिन हम संभवत: उनको रोकने की सामर्थ्य जुटा नहीं पाते हैं। जैसे अगर किसी का एक्सिडेंट हो जाए, तो आज की तारीख में लोग उसको उठाने में डरते हैं, उसकी सहायता करने में विलम्ब करते हैं, जिससे उसकी जिन्दगी खतरे में पड़ जाती है। इसी प्रकार प्रदूषण को रोकने के लिए और उससे होने वाले खतरों से बचने के लिए हमें खतरा तो मोल लेना ही होगा। जब तक

हम क़तरा-क़तरा खतरा नहीं उठाते हैं, थोड़े-थोड़े खतरे नहीं उठाते हैं, तब तक हम इससे मुक्ति नहीं पा सकते हैं। इससे मुक्ति पाने के लिए संकल्प की आवश्यता है। मैं चाहता हूं कि माननीय मंत्री जी और सरकार इसके लिए सकारात्मक उपाय करे ताकि दिल्ली ही नहीं पूरे देश को प्रदूषण से मुक्त किया जा सके। इस काम में इनको सफलता मिले, इसके लिए मैं शुभकामना करता हूं, साथ ही अपना वक्तव्य भी यहीं समाप्त करता हूं, धन्यवाद।

(समाप्त)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Thank you Jatiyaji. Shrimati Kanimozhi. You have three plus one, four minutes. …(Interruptions)…

AN HON. MEMBER: One bonus!

SHRI SUKHENDU SEKHAR RAY: Lady Member should get extra time.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: We should show some more consideration. But they are equal to everybody. I treat every Lady Member as equal to …

SHRIMATI KANIMOZHI: Sir, after we get 33 per cent, and then we may bring it to 50 per cent, you can treat us equally.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: But I said, I treat equally. …(Interruptions)… I support 50 per cent. No problem. I support. Let the Bill come.

SHRIMATI KANIMOZHI: The Government has to bring the Bill. They are not bringing it. Sir, you should ask the Government.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The Government should hear it. The Government is not listening. The Parliamentary Affairs Minister has to listen to what the hon. Member has said. …(Interruptions)…

SHRIMATI KANIMOZHI: The Women's Reservation Bill. …(Interruptions)…

SHRI LA. GANESAN: They were with the Congress Party and they …

SHRIMATI KANIMOZHI: No, we brought it in the Rajya Sabha and it was passed.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: It was passed in the Rajya Sabha. …(Interruptions)… Okay. Now you start.

(Followed by 3a/SKC)